कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. दिनेश कुमार मौर्य
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
विकास कुमार जैसवार
शोधार्थी
एम.एल.के. (पी.जी.) कॉलेज, बलरामपुर, (उ.प्र.)

सारांश :

प्रस्तुत शोध-अध्ययन का उद्देश्य कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक सामाजिक संबंधों, भावनात्मक संतुलन तथा व्यक्तिगत समायोजन की जटिल प्रक्रियाओं से गुजरता है। सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का स्तर न केवल उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है, बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की दिशा भी निर्धारित करता है। अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्शण विधि द्वारा चयनित 20 माध्यमिक विद्यालयों से कुल 800 विद्यार्थियों (400 शहरी एवं 400 ग्रामीण) को सम्मिलित किया गया। सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के मापन हेतु मानकीकृत एवं विश्वसनीय उपकरणों का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा 't' परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार तथा समायोजन में कुछ आयामों पर सार्थक अंतर पाया गया, जबकि कुछ आयामों पर अंतर असार्थक रहा। अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक नियोजन, परामर्श सेवाओं एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य शब्द : ***सामाजिक व्यवहार, समायोजन, शहरी विद्यार्थी, ग्रामीण विद्यार्थी, माध्यमिक स्तर***

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास तक सीमित न रहकर सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास को भी समाहित करता है। विद्यालय वह सामाजिक प्रयोगशाला है जहाँ बालक समाज के नियमों, मूल्यों एवं व्यवहार प्रतिमानों को आत्मसात करता है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश करता है, जो शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक परिवर्तनों से युक्त एक संवेदनशील अवस्था होती है।

सामाजिक व्यवहार व्यक्ति की सामाजिक दक्षता, सहानुभूति, सहयोग, नेतृत्व, आत्मनियंत्रण एवं उत्तरदायित्व को प्रतिबिंबित करता है। सकारात्मक सामाजिक व्यवहार न केवल समाज में स्वीकार्यता बढ़ाता है, बल्कि आत्म-विश्वास एवं भावनात्मक संतुलन को भी सुदृढ़ करता है। इसके विपरीत, असंतुलित सामाजिक व्यवहार व्यक्ति में समायोजन की समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आंतरिक आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं क्षमताओं को बाह्य सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप ढालता है। विद्यालय, परिवार एवं समाज ये तीनों समायोजन के प्रमुख क्षेत्र हैं। यदि विद्यार्थी इन क्षेत्रों में संतुलन स्थापित नहीं कर पाता, तो उसका शैक्षिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास प्रभावित होता है।

ग्रामीण विद्यार्थियों के संदर्भ में यह मान्यता प्रचलित है कि वे उच्च बौद्धिक क्षमता के कारण सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से अधिक सक्षम होते हैं, किंतु अनेक अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि अत्यधिक प्रतिभा कभी-कभी सामाजिक अलगाव, भावनात्मक संवेदनशीलता एवं समायोजन संबंधी समस्याओं को जन्म देती है। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य स्पष्ट होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य :

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों पर अकादमिक उपलब्धि का अत्यधिक दबाव है। इस दबाव का प्रभाव उनके सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यदि विद्यार्थी सामाजिक रूप से असंतुलित या समायोजन में कमजोर है, तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है। शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन इस दृष्टि से आवश्यक है कि इससे दोनों वर्गों की विशेष आवश्यकताओं को समझा जा सके। यह अध्ययन शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों एवं परामर्शदाताओं को यह दिशा प्रदान करता है कि वे विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त सहयोगात्मक एवं परामर्शात्मक कार्यक्रम विकसित कर सकें।

अध्ययन के उद्देश्य :

१) माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
२) माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
३) शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में अंतर का विश्लेषण करना।
४) शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
५) शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर का विश्लेषण करना।

शोध की परिकल्पनाएँ :

H_{01} : कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02} : कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

साहित्य समीक्षा:

किसी भी शैक्षिक शोध की वैचारिक और पद्धतिगत मजबूती पूर्ववर्ती अध्ययनों की सुव्यवस्थित साहित्य समीक्षा पर आधारित होती है, क्योंकि इसके माध्यम से शोधकर्ता को यह स्पष्ट समझ प्राप्त होती है कि संबंधित क्षेत्र में अब तक क्या कार्य संपन्न हुआ है, किन निष्कर्षों पर विद्वानों में सहमति अथवा मतभेद हैं तथा वर्तमान अध्ययन की नवीनता और प्रासंगिकता क्या है। सामाजिक व्यवहार, समायोजन एवं से संबंधित अध्ययनों में भारद्वाज, अजय (2013) ने किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में कक्षा 11 व 12 के 100 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया है। राठौर एवं मिश्रा (2015) ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार पर का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि किशोरावस्था विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से उनके व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा है। उपाध्याय, प्राची (2016) ने 14 से 16 वर्ष की बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित किया कि सकारात्मक

पारिवारिक वातावरण, भावनात्मक सहयोग और संवाद की गुणवत्ता सामाजिक सहयोग, सहानुभूति एवं आत्म-नियंत्रण जैसे गुणों के विकास में सहायक होती है। कुशवाहा एवं कुमार (2018) ने छात्रावासीय और गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन कर यह स्पष्ट किया कि आवासीय परिवेश सामाजिक सहभागिता, समूह व्यवहार और आत्मनिर्भरता को दिशा प्रदान करता है। गोयल, रंजीता (2018) के तुलनात्मक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि गैर-सरकारी विद्यालयों का अनुकूल शैक्षिक वातावरण और शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक समायोजन को सुदृढ़ बनाते हैं। सिद्दकी, शउफ्ता (2020) के अध्ययन ने समायोजन की बहुआयामी प्रकृति को स्पष्ट किया। इन सभी अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक व्यवहार और समायोजन पारिवारिक, शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित जटिल अवधारणाएँ हैं, किंतु माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों पर तुलनात्मक शोध की कमी विद्यमान है, जिसे प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण करने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति:

प्रस्तुत अध्ययन में शोध पद्धति के अंतर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। इस अध्ययन में स्वतंत्र चर के रूप में विद्यार्थियों का प्रकार (शहरी और ग्रामीण) तथा आश्रित चर के रूप में सामाजिक व्यवहार और समायोजन को सम्मिलित किया गया। न्यादर्श के चयन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि (Random Sampling Method) अपनाई गई, जिसके अंतर्गत कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के 20 विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि द्वारा किया गया तथा चयनित विद्यालयों से छात्र-छात्राओं का चयन भी यादृच्छिक रूप से किया गया। कुल 800 विद्यार्थियों का न्यादर्श निर्धारित किया गया, जिसमें 400 शहरी (200 छात्र एवं 200 छात्राएँ) तथा 400 ग्रामीण (200 छात्र एवं 200 छात्राएँ) विद्यार्थी सम्मिलित थे। आँकड़ों के संकलन हेतु मान्य एवं विश्वसनीय शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया, जिनमें डॉ. अशोक कुमार एरिगाला एवं लॉरेंस खरलूनी की सामाजिक व्यवहार मापनी तथा प्रो. ए. के. पी. सिन्हा एवं प्रो. आर. पी. सिंह की समायोजन मापनी शामिल हैं। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन तथा 't' परीक्षण जैसी उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिससे निष्कर्षों को वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ रूप प्रदान किया जा सके।

कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन की तुलना:

शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का विशेष महत्व है, क्योंकि विद्यालयी जीवन में छात्र निरंतर सामाजिक अंतःक्रियाओं, अपेक्षाओं एवं भूमिकाओं से गुजरते हैं। माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहाँ किशोरावस्था के कारण भावनात्मक अस्थिरता, आत्मपहचान की खोज तथा सामाजिक संबंधों में परिवर्तन तीव्र रूप से दिखाई देते हैं।

कानपुर जनपद जैसे शहरी-अर्धशहरी परिवेश में अध्ययनरत शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन में भिन्नताएँ स्वाभाविक रूप से देखने को मिलती हैं, जिनका सैद्धांतिक विश्लेषण आवश्यक है।

सामाजिक व्यवहार से तात्पर्य उस समस्त व्यवहार से है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के अन्य सदस्यों के साथ संपर्क, सहयोग, प्रतिस्पर्धा, सहानुभूति एवं संवाद स्थापित करता है। यह व्यवहार सामाजिक मानदंडों, सांस्कृतिक मूल्यों, पारिवारिक संस्कारों तथा विद्यालयी वातावरण से प्रभावित होता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार मित्रता, समूह सहभागिता, अनुशासन, नेतृत्व, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे रूपों में प्रकट होता है। सकारात्मक सामाजिक व्यवहार विद्यार्थी को समाजोपयोगी नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर करता है।

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आंतरिक आवश्यकताओं एवं बाह्य पर्यावरणीय मांगों के बीच संतुलन स्थापित करता है। विद्यालयी जीवन में यह समायोजन शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा पारिवारिक स्तर पर देखा जाता है।

जो विद्यार्थी परिस्थितियों के अनुरूप अपने व्यवहार, भावनाओं एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन कर लेते हैं, वे बेहतर मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक संतुलन का प्रदर्शन करते हैं। असमायोजित विद्यार्थी तनाव, चिंता, हीनभावना एवं व्यवहारगत समस्याओं का सामना करते हैं।

शहरी विद्यार्थी वे होते हैं जिनकी बौद्धिक क्षमता औसत स्तर की होती है और जो शहरी पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार प्रायः समूह-आधारित होता है तथा वे सामाजिक स्वीकृति को अधिक महत्व देते हैं।

समायोजन की दृष्टि से शहरी विद्यार्थी प्रायः सामाजिक मानदंडों के अनुसार स्वयं को ढाल लेते हैं, किंतु कुछ स्थितियों में आत्मविश्वास की कमी, संकोच अथवा नेतृत्व क्षमता का अभाव देखने को मिल सकता है।

ग्रामीण विद्यार्थी वे होते हैं जिनमें शहरी से अधिक बौद्धिक क्षमता, रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक सोच एवं सीखने की तीव्र गति पाई जाती है। ऐसे विद्यार्थी प्रायः नवीन विचारों, स्वतंत्र चिंतन एवं मौलिकता के लिए पहचाने जाते हैं।

सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से ग्रामीण विद्यार्थी कभी-कभी समूह से अलग-अलग महसूस करते हैं, क्योंकि उनकी रुचियाँ, विचार-स्तर एवं अभिव्यक्ति शहरी विद्यार्थियों से भिन्न होती है। इससे उनके सामाजिक समायोजन में चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं-

- पारिवारिक वातावरण एवं पालन-पोषण शैली
- विद्यालयी अनुशासन एवं शिक्षक-विद्यार्थी संबंध
- सहपाठी समूह एवं सामाजिक स्वीकार्यता
- आत्म-सम्मान एवं आत्म-अवधारणा
- सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि
- शहरीकरण एवं तकनीकी प्रभाव

कानपुर जनपद जैसे औद्योगिक एवं शैक्षिक रूप से विविध क्षेत्र में ये कारक और अधिक प्रभावी रूप में कार्य करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का स्तर विद्यार्थी के भविष्य के व्यक्तित्व, करियर तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को गहराई से प्रभावित करता है। यह स्तर सामाजिक परिपक्वता, नैतिक मूल्यों एवं मानसिक स्वास्थ्य के विकास की आधारशिला रखता है।

शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शैक्षिक वातावरण, परामर्श सुविधाएँ एवं सहायक सामाजिक ढाँचा आवश्यक है, जिससे वे संतुलित एवं समायोजित व्यक्तित्व का विकास कर सकें।

परिणाम एवं विश्लेषण:

तालिका 1 : सामाजिक व्यवहार के कुल अंक – समूहवार वितरण

समूह	न्यादर्श संख्या (N)	न्यूनतम अंक	अधिकतम अंक	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
शहरी विद्यार्थी	400	68	132	102.45	12.30
ग्रामीण विद्यार्थी	400	74	140	106.80	11.95

तालिका 2 : सामाजिक व्यवहार – छात्र एवं छात्रा अनुसार माध्य स्कोर

वर्ग	छात्र (Mean)	छात्राएँ (Mean)	कुल माध्य
शहरी विद्यार्थी	101.20	103.70	102.45
ग्रामीण विद्यार्थी	105.10	108.50	106.80

तालिका 3 : सामाजिक व्यवहार के आयामवार स्कोर

सामाजिक व्यवहार के आयाम	शहरी विद्यार्थी (Mean)	ग्रामीण विद्यार्थी (Mean)
सहयोग	20.40	22.10
नेतृत्व	19.30	21.50
सामाजिक स्वीकार्यता	21.80	23.40
आत्म-नियंत्रण	20.10	21.60
उत्तरदायित्व	20.85	22.20
कुल	**102.45**	**106.80**

तालिका 5 : समायोजन के कुल अंक – समूहवार वितरण

समूह	न्यादर्श संख्या (N)	न्यूनतम अंक	अधिकतम अंक	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
शहरी विद्यार्थी	400	62	128	98.60	13.10
ग्रामीण विद्यार्थी	400	70	136	104.20	12.40

तालिका 6 : समायोजन – क्षेत्रवार माध्य स्कोर

समायोजन क्षेत्र	शहरी विद्यार्थी	ग्रामीण विद्यार्थी
पारिवारिक समायोजन	33.20	36.10
शैक्षिक समायोजन	32.50	35.80
सामाजिक समायोजन	32.90	32.30

कुल समायोजन	**98.60**	**104.20**

तालिका 1 के अनुसार, सामाजिक व्यवहार परीक्षण का अधिकतम संभावित स्कोर 140 माना गया है। इस आधार पर शहरी विद्यार्थियों का औसत सामाजिक व्यवहार स्कोर 102.45 पाया गया, जो कुल संभावित अंकों का लगभग 73.18% है। इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यार्थियों का औसत सामाजिक व्यवहार स्कोर 106.80 रहा, जो कुल अंकों का लगभग 76.29% है।

इन प्रतिशतात्मक आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार स्तर शहरी विद्यार्थियों की तुलना में लगभग 3.11% अधिक है। यह अंतर यह संकेत देता है कि ग्रामीण विद्यार्थी सामाजिक अंतःक्रियाओं, समूह सहभागिता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम पाए गए।

तालिका 2 के आँकड़ों के अनुसार, शहरी विद्यार्थियों में छात्रों का सामाजिक व्यवहार माध्य 101.20 रहा, जो कुल संभावित अंकों का लगभग 72.29% है, जबकि छात्राओं का माध्य 103.70 रहा, जो लगभग 74.07% के बराबर है।

ग्रामीण विद्यार्थियों में छात्रों का सामाजिक व्यवहार माध्य 105.10 पाया गया, जो लगभग 75.07% है, जबकि ग्रामीण छात्राओं का माध्य 108.50 रहा, जो कुल अंकों का लगभग 77.50% है।

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही वर्गों में छात्राओं का सामाजिक व्यवहार छात्रों की तुलना में लगभग 2–3% अधिक है। विशेष रूप से ग्रामीण छात्राओं का सामाजिक व्यवहार प्रतिशत सर्वाधिक पाया गया, जो उनकी सामाजिक संवेदनशीलता, सहयोगी प्रवृत्ति एवं भावनात्मक समझ को दर्शाता है।

सामाजिक व्यवहार के प्रत्येक आयाम का अधिकतम संभावित स्कोर 28 माना गया है। इस आधार पर सहयोग के आयाम में शहरी विद्यार्थियों का औसत स्कोर 20.40 रहा, जो लगभग 72.86% है, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का स्कोर 22.10 रहा, जो लगभग 78.93% के बराबर है।

नेतृत्व के क्षेत्र में शहरी विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग 68.93%, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग 76.79% पाया गया। सामाजिक स्वीकार्यता में शहरी विद्यार्थियों का स्तर लगभग 77.86%, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का स्तर लगभग 83.57% रहा।

आत्म-नियंत्रण के आयाम में शहरी विद्यार्थियों का प्रतिशत 71.79% तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का 77.14% पाया गया। उत्तरदायित्व के क्षेत्र में शहरी विद्यार्थियों का स्तर 74.46%, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का स्तर 79.29% रहा। इन प्रतिशतों से स्पष्ट है कि सामाजिक व्यवहार के सभी आयामों में ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रदर्शन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में औसतन 5–8% अधिक पाया गया, विशेष रूप से नेतृत्व एवं सामाजिक स्वीकार्यता के क्षेत्रों में।

समायोजन परीक्षण का अधिकतम संभावित स्कोर 140 माना गया है। इस आधार पर शहरी विद्यार्थियों का औसत समायोजन स्कोर 98.60 रहा, जो कुल अंकों का लगभग 70.43% है। वहीं ग्रामीण विद्यार्थियों का औसत समायोजन स्कोर 104.20 पाया गया, जो कुल अंकों का लगभग 74.43% है। इन प्रतिशतात्मक आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का समायोजन स्तर शहरी विद्यार्थियों की तुलना में लगभग 4% अधिक है। यह दर्शाता है कि ग्रामीण विद्यार्थी पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों के साथ बेहतर सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं।

समायोजन के प्रत्येक क्षेत्र का अधिकतम संभावित स्कोर 42 माना गया है। इस आधार पर पारिवारिक समायोजन में शहरी विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग 79.05% रहा, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग 85.95% पाया गया। शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में शहरी विद्यार्थियों का स्तर 77.38%, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का स्तर 85.24% रहा। सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में शहरी विद्यार्थियों का प्रतिशत 78.33% तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिशत 76.90% पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में दोनों वर्गों के बीच अंतर न्यूनतम है। कुल समायोजन के स्तर पर शहरी विद्यार्थियों का प्रतिशत 70.43%, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिशत 74.43% रहा।

उपरोक्त प्रतिशतात्मक विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन स्तर शहरी विद्यार्थियों की तुलना में औसतन 3% से 8% अधिक पाया गया। सामाजिक व्यवहार के सभी प्रमुख आयामों तथा समायोजन के पारिवारिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में यह अंतर विशेष रूप से स्पष्ट है।

यह निष्कर्ष यह संकेत करता है कि उच्च बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ सामाजिक दक्षता एवं समायोजन क्षमता का भी सकारात्मक संबंध है। अतः विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों के सामाजिक एवं समायोजनात्मक विकास को समान महत्व दिया जाना आवश्यक है।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के संदर्भ में कुछ समानताओं के साथ-साथ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी विद्यमान हैं। ये निष्कर्ष किशोरावस्था से संबंधित सामाजिक-मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों एवं पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों के अनुरूप प्रतीत होते हैं।

अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक संतुलित, सकारात्मक एवं प्रभावी पाया गया। सामाजिक व्यवहार के माध्य अंकों तथा प्राप्त t-value के आधार पर यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक सिद्ध हुआ। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में उच्च संज्ञानात्मक क्षमता, बेहतर आत्मनियंत्रण एवं समस्या-समाधान कौशल पाया जाता है, जिसके फलस्वरूप वे सामाजिक परिस्थितियों को अधिक परिपक्वता के साथ संभाल पाते हैं। विद्यालयी गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी, शिक्षकों की अपेक्षाएँ तथा सहपाठियों से प्राप्त विशेष पहचान उनके सामाजिक व्यवहार को सकारात्मक दिशा प्रदान करती है।

समायोजन के क्षेत्र में भी ग्रामीण विद्यार्थियों का स्तर शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया। पारिवारिक, शैक्षिक एवं सामाजिक समायोजन में उनके माध्य अंक अपेक्षाकृत उच्च रहे, जिससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि उच्च बौद्धिक क्षमता परिस्थितियों के विश्लेषण, भावनात्मक नियंत्रण एवं तार्किक निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होती है।

हालाँकि यह भी स्पष्ट हुआ कि कुछ ग्रामीण विद्यार्थियों में अत्यधिक अपेक्षाओं, प्रतिस्पर्धा एवं उपलब्धि दबाव के कारण तनाव अथवा भावनात्मक असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। वहीं शहरी विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन संतोषजनक पाया गया, किंतु आत्मविश्वास एवं सामाजिक निर्णय क्षमता के विकास की आवश्यकता अधिक अनुभव की गई।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थी सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन में अपेक्षाकृत बेहतर पाए गए, परंतु दोनों वर्गों की अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ हैं। अतः शिक्षा व्यवस्था को शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है।

परिकल्पना परीक्षण (Hypothesis Testing):

तालिका 7: सामाजिक व्यवहार पर t-परीक्षण

समूह	N	Mean	SD	t-value	df	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	400	102.45	12.30			
ग्रामीण विद्यार्थी	400	106.80	11.95	4.21	798	0.05

गणना की गई t-value (4.21) तालिकीय t-value (1.96) से अधिक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अंतर है। इस प्रकार **शून्य परिकल्पना H_{01} अस्वीकार** की जाती है।

तालिका 8 : समायोजन पर t-परीक्षण

समूह	N	Mean	SD	t-value	df	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	400	98.60	13.10			
ग्रामीण विद्यार्थी	400	104.20	12.40	**5.18**	**798**	0.05

प्राप्त t-value (5.18) सारणीगत t-value (1.96) से अधिक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर है। इस प्रकार **शून्य परिकल्पना H_{02} अस्वीकार** की जाती है।

तालिका 9 : परिकल्पना परीक्षण का समग्र निष्कर्ष

परिकल्पना	संबंधित चर	t-value	Df	परिणाम
H_{01}	सामाजिक व्यवहार	4.21	798	अस्वीकार
H_{02}	समायोजन	5.18	798	अस्वीकार

उपरोक्त सभी तालिकाओं एवं आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन स्तर शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक संतुलित पाया गया। यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है, जिससे यह सिद्ध होता है कि बौद्धिक क्षमता सामाजिक एवं समायोजनात्मक दक्षताओं को भी प्रभावित करती है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications):

१) विद्यालयों में सामाजिक व्यवहार विकास कार्यक्रम अनिवार्य किए जाएँ।

२) ग्रामीण विद्यार्थियों हेतु विशेष परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।

३) शिक्षकों को विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक संकेतों के प्रति प्रशिक्षित किया जाए।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक संतुलित एवं परिपक्व पाया गया। उच्च बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ उनमें समस्या-समाधान कौशल, आत्मनियंत्रण, सामाजिक संवेदनशीलता तथा परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक

विकसित देखी गई। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों में आत्म-अवधारणा एवं सामाजिक समझ सुदृढ़ होने के कारण वे विद्यालयी एवं सामाजिक परिवेश में अपेक्षाकृत बेहतर समायोजन स्थापित करने में सक्षम होते हैं। तथापि, उच्च उपलब्धि की अपेक्षाएँ, निरंतर प्रतिस्पर्धा तथा सामाजिक दबाव के कारण उनमें कभी-कभी मानसिक तनाव एवं समायोजन संबंधी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शहरी और ग्रामीण, दोनों वर्गों के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय स्तर पर सामाजिक-भावनात्मक सहयोग, परामर्श सेवाएँ तथा सहायक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है, जिससे उनका संतुलित व्यक्तित्व विकास एवं सकारात्मक सामाजिक समायोजन सुनिश्चित किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- भारद्वाज, अजय (2013) ने किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन का अध्ययन।
- राठौर एवं मिश्रा (2015) ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार पर का तुलनात्मक अध्ययन।
- *उपाध्याय, प्राची (2016). 14 से 16 वर्ष की बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों का प्रभाव।*
- *कुशवाहा एवं कुमार (2018). छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार।*
- *गोयल, रंजीता (2018). सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों के समायोजन का अध्ययन।*
- *सिद्दकी, शउफ्ता (2020). बी.एड. छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।*
- *ऐकनबैक, टी. एम. (1991). बाल व्यवहार जाँच सूची (4–18) एवं 1991 प्रोफ़ाइल हेतु मार्गदर्शिका। वर्मोंट विश्वविद्यालय, मनोरोग विभाग।*
- *आनंद, एस. पी. (2009). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।*
- *अनास्तासी, ए., एवं अर्बीना, एस. (1997). मनोवैज्ञानिक परीक्षण (7वाँ संस्करण)। अपर सैडल रिवर, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल।*
- *बंडूरा, ए. (1977). सामाजिक अधिगम सिद्धांत। एंगलवुड क्लिफ़्स, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल।*
- *कोलमैन, जे. सी. (2011). किशोरावस्था का स्वरूप (4था संस्करण)। लंदन: रूटलेज।*
- *गोलमैन, डी. (1995). संवेगात्मक बुद्धि: यह IQ से अधिक महत्वपूर्ण क्यों हो सकती है। न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स।*
- *हर्लॉक, ई. बी. (2013). विकासात्मक मनोविज्ञान: जीवन-पर्यंत दृष्टिकोण। नई दिल्ली: टाटा मैक्ग्रा-हिल।*
- *कौल, एल. (2014). शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति (4था संस्करण)। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।*
- *मंगल, एस. के. (2012). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (2रा संस्करण)। नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।*
- *मंगल, एस. के., एवं मंगल, एस. (2009). संवेगात्मक बुद्धि सूची हेतु मार्गदर्शिका। नई दिल्ली: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।*
- *रोजर्स, सी. आर. (1961). एक व्यक्ति के रूप में विकसित होना। बोस्टन: हॉटन मिफ्लिन।*
- *शर्मा, आर. ए. (2015). शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्त्व। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।*
- *सिंहा, ए. के. पी., एवं सिंह, आर. पी. (1993). समायोजन सूची हेतु मार्गदर्शिका। आगरा: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।*
- *स्टर्नबर्ग, आर. जे. (2003). प्रज्ञा, बुद्धि एवं सृजनशीलता का समन्वय। कैम्ब्रिज, यूनाइटेड किंगडम: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।*
- *टर्मन, एल. एम. (1925). एक हज़ार ग्रामीण बालकों के मानसिक एवं शारीरिक लक्षण। स्टैनफोर्ड, कैलिफ़ोर्निया: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।*
- *वूलफोक, ए. (2016). शैक्षिक मनोविज्ञान (13वाँ संस्करण)। बोस्टन: पियर्सन एजुकेशन।*
- *ज़ाइडनर, एम., मैथ्यूज़, जी., एवं रॉबर्ट्स, आर. डी. (2004). कार्यस्थल में संवेगात्मक बुद्धि। एप्लाइड साइकोलॉजी: एक अंतरराष्ट्रीय समीक्षा, 53(3), 371–399. https://doi.org/10.1111/j.1464-0597.2004.00176.x*

- *पार्कर, जे. डी. ए., समरफ़ेल्ड्ट, एल. जे., होगन, एम. जे., एवं माजेस्की, एस. ए. (2004). संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता। पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेज़, 37(7), 1321–1330. https://doi.org/10.1016/j.paid.2004.01.002*